धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

मार्च- 2013

* पाप स्त्रोत
* पूजा का साधन
* दूध की गंगा
* दृढ़ता से कोलंबस ने खोजा अमेरिका
* मात पिता संतान दिवस
* कल्याण में माता पिता दिवस

के किनारे मेरे दादा जी, माता पिता ने जो तपस्या की, वह नज़र आई है। इतना बड़ा उपकार इस दर पर आने से पहले कभी नज़र नहीं आया। दादी जी बहुत सुन्दर थी, खेतों में काम करके उन्होंने अपनी सुन्दरता खो दी। अब गुरू महाराज के बाद सब उपकारियों को प्रणाम करता हूं।

श्रीमती भरपूर कौर जी, मोगा: - मैंने इस दर से बहुत कुछ पाया है। सब कुछ भुलाए बैठी हूं। इस दर पर आने से पहले सब बर्बादी की कहानी है। मेरा घर स्वर्ग बना है। मैं बच्चों को उतनी तड़प से प्रेरणा नहीं करती, जितनी करनी चाहिए। मेरी ऐसी कामना है कि मैं और मेरा परिवार इस दर से जुड़ा रहे।

श्रीमान सीताराम जी संगरूर:- मेरा दिल यहां आकर हिल जाता है। माता की सेवा की समझ यहां आकर आई है। देव समाज में आकर मां ने तम्बाकू से मुक्ति पाई, मुझे बेहद खुशी हुई। हर महीने और सेवा के ईलावा पैसे से भी माता की सेवा करता रहा हूं। हर साल भाईयों को घर बुलाकर उनके गलों मे फूल मालाएं पहनाकर खाना खिलाता हूं। यह सब गुरू की कृपा है।

श्रीमान हरदेव सिंह जी केसूपुरा: - चार पांच वर्ष पहले की बात है कि मेरी मां ने खेत में मुझे 4 - 5 थप्पड़ मार दिए थे। यदि मुझे यह संगत न मिली होती तो मैं वहीं थप्पड़ मार देता। इस दर ने कुछ होश दी है। मेरे ऊपर गुरू की कृपा होती रहे।

श्रीमान कुलदीप सिंह जी कल्याण:- इस सभा में पिता जी के रूप के कुछ दर्शन हुए हैं। सन 1951 में 40 घुमाऊं ज़मीन एक ज़मीदार ने मेरे पिता के नाम करवा दी। मेरे पिता बहुत पवित्र और ईमानदार थे। मैं वैसा नहीं हूं।

श्री अजय गुप्ता जी दिल्ली: - इस संगत की कदर धीरे- धीरे होने लगी है। परिवार ने इस दर से दूर रहकर बहुत हानि उठाई है। अन्दर अन्दर ही नुकसान होता रहा। जुड़े रहने की प्रेरणा मिली है। श्रीमान जी का धन्यवाद करता हूं।

श्रीमान अनिलकुमार जी पदमपुर : - माता पिता शरीर की रक्षा और विकास करते हैं, यह बोध गहरा हुआ है। माता पिता की तड़प की तरह गुरू महाराज के भीतर अपने सेवकों के हित की तड़प है। मैं गहरे रूप से गुरू से जुड़ा रह सकूं ऐसी कामना है।

श्रीमान किशोरी लाल जी (भंटिडा): - सम्बन्ध तत्व के बिना कोई धर्म नहीं। मेरे माता पिता ने मुझे पढ़ाने के लिए जो उपकार किए हैं, वह याद आ रहे थे। हररोज़ 5.45 पर उनके लिए प्रार्थना करता हूं। मेरे भाई साईकल पर बिठाकर मुझे पढ़ाने ले जाते थे। उनका उपकार नज़र आया है। गुरू की कृपा से भाई साहिब के सम्बन्ध में हानि परिशोध के साधन किए हैं। फूलों के हार द्वारा उनका सम्मान किया, उपहार भी दिए हैं। गुरू ने भाई के साथ मेल पैदा कर दिया। मेरा भाई भी महसूस करता है।

अन्त में 30 - 35 जनों ने फूलों के हारों के द्वारा माता पिता का सन्मान किया, उनके चरणों में सिर रखकर प्रणाम किया। बहुत ही सुन्दर, भाव पूर्ण वातावरण पैदा हुआ जो गुरू के आगे सजदा करने को मजबूर कर रहा था।

लंगर के लिए 12300 रू दान प्राप्त हुआ। चार सौभाग्यवान जनों ने शराब से बचे रहने की प्रतिज्ञा की। गुरू की कृपा से यह सत्संग सचमुच कल्याणकारी रहा।

(एक हाजनीन)

धर्म जीवन

खण्ड 26 अंक 3

मार्च – 2013

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

पाप स्त्रोत

पुराने धर्म मत, (जैन और बुद्ध धर्म को छोड़कर) चाहे वह हिन्दुमत, सनातन धर्म, वेदांत, आर्या समाज, सिक्ख मत, मुस्लिम, ईसाई मत आदि कोई भी हो, सब ईश्वरवादी और ईश्वर पूजक मत ही हैं। उन धर्मो का लक्ष्य है ईश्वर स्तुति, ईश्वर महिमा और ईश्वर का गुणगान करना। इन धर्मो का मुख्य मन्तव्य है ईश्वर की खोज, ईश्वर की भक्ति, ईश्वर का जाप, ईश्वर दर्शन वा ईश्वर प्राप्ति। इसके लिए जो अधिक जाप करता हो, गुणगान करता हो, ईश्वर की स्तुति से भरे ग्रन्थों का ज्ञाता और ज्ञानी हो, उसे महान, उच्च वा पहुंचा हुआ महान पुरुष समझा जाता है, या मनुष्य जन्म को सफल करने वाला महा भाग्यशाली समझा जाता है और उसको सन्मानित किया जाता है।

विज्ञान के युग में वैज्ञानिक विचारों पर आधारित धर्म, केवल मात्र देव धर्म ही है। परम पू० भगवान देवात्मा ने विज्ञान की नींव पर ऐसे धर्म की स्थापना की है, कि इसकी कुल शिक्षा नेचर के अटल नियमों पर और नेचर की सत्य घटनाओं पर आधारित है, इसीलिए इसे सांईसी धर्म या विज्ञान मूलक धर्म भी कहा जाता है। विज्ञान पर आधारित होने के कारण देव धर्म ईश्वर जैसे किसी अस्तित्व को नहीं मानता और यह पूर्ण निरीश्वरवादी धर्म है। देव धर्म का मुख्य लक्ष्य है मनुष्य के निज के अस्तित्व की विनाश वा दुख से मुक्ति वा सुरक्षा वा उसका विकास करना। नीच जीवन से दुर्बल मनुष्य को निकालकर, उच्च जीवन प्रदान करके, मनुष्य को चारों जगतों सम्बन्धी विकास के महान नियम का साथी वा भक्त बनाकर चारों जगतों की विशुद्ध सेवा में रत रहकर उसका सच्चा विकास करना।

अब देखना यह है कि मनुक्ष्य को नीच कौन बनाता है, या पापी कौन बनाता है? या पापी वा नीच मनुष्य कौन होता है? स्वाभाविक ही नशई, शराबी, हुक्का, चरस, चण्डू, अफीम, सुलफा पीने वाले नशेड़ियों को बुरा वा नीच समझा जाता है, मासाहारियों, बुच्चड़ों, कसाईयों, शिकारियों को जो मासूम वा बेगुनाहों का घात करते हैं, उनको नीच कहा जाता है। मन्दकर्मियों, बदचलनों, बलात्कारियों को, कंजरों, वैश्याओं और उनके साथियों, लुच्चे लफंगे इन्सानों को नीच समझा जाता है। चारों, डाकुओं, राहजनों, ठगों, रिश्वतखोरों, बेईमानों, दूसरों का हक अपहरणकर्ताओं, पराया खून पीने वालों को बुरा समझा जाता है, इसीलिए देव धर्म उपरोक्त सारे पापों को छुड़ाकर अपने निकट करता

है।

अगला प्रश्न है कि मनुष्य उक्त पाप क्यों करता है? मनुष्य अपने सुखों का सगा है। सदा अपना सुख चाहता है। निज सुख प्राप्ति की हवस के साथ बौख़ला जाता है और पाप करने के लिए बेबस और मजबूर हो जाता है। मनुष्य अपनी "मैं" को प्यार करता है। अपने सुखों के लिए जोरदार अकर्षण रखता है, उन सुखों की प्रप्ति के लिए सरपट दौड़ पड़ता है और पाप लिप्त हो जाता है।

हां मनुष्य ही अपने आपको अधिक प्यार करता है। "मैं" को प्यार करता है। मेरा सुख, मेरा रस, मेरी मौज, मेरा स्वाद, मेरा लाभ, मेरा आराम, इन सब को जोर दार प्यार करता है। अपने सुखों का जोरदार इश्क रखता है। "मैं" का प्यार स्वार्थ सिद्धि करता है। उसकी तृप्ति मनुष्य को स्वार्थी बनाती है। "मैं" के इश्क से ही स्वार्थ पैदा होता है। हमारी "मैं" या अंह ही हमारे सारे उपरोक्त नीच कर्मो वा पाप कर्मो का स्त्रोत है। यही स्वार्थ सब बुराईयों की जड़ है।

"अंह भाव स्वार्थ का उत्पादक, स्वार्थ भाव जीवन का नाशक, स्वार्थ तजो तब जीवन पाओ," यह गुरू महाराज का फरमान है। मनुष्य के महा नाश का कारण उसका अंह अनुराग है और उससे उपजा स्वार्थ का भाव है।

स्वार्थी मनुष्य के सम्बन्ध में परम पू० भगवान देवात्मा इस प्रकार फरमाते हैं: -

"जो मनुष्य जितना नीच होता है, उतना ही वह स्वार्थ से भरा हुआ होता है और इसीलिए स्वार्थ से परिपूर्ण नीच जनों के द्वारा किसी समाज या देश का कोई हित साधन नहीं हो सकता। जो मनुष्य जितना स्वार्थ त्याग करता है, वह उतना ही उच्च बनता है और उतना ही दूसरों का हित साधन करता है। हमारे सामाजिक जनों के भीतर भी जितना स्वार्थ त्याग का भाव बढ़ेगा, उतना ही उनका और समाज का हित साधन होगा।"

अपनी स्वार्थ सिद्धि, सुरक्षा सिद्धि, या सुख स्वाद आराम सिद्धि करके न कुछ अपना और न किसी और या समाज या देश का भला कर सकते हैं। दूसरे धर्मो में ईश्वर भक्ति, ईश्वर पूजा, ईश्वर के गुणगान की महत्तता है, देव धर्म में मनुष्य को "अंह" बोधी, अधिक से अधिक अंह मुक्त और त्यागी बनाकर अधिक से अधिक स्वार्थ त्याग करने वालों की सच्ची महत्तता वा महानता है। यही देव धर्म का मुख्य कारज है। देव धर्म में आकर, देव धर्म में रहकर, देव धर्म का कार्यकर्ता बनकर, यदि मनुष्य अपने महा शत्रु 'अंह' वा "मैं" के प्रेम का बोधी न बने और काफी सीमा तक अंह मुक्त नहीं बनता या मुक्त होना अपना मुख्य लक्ष्य नहीं बनाता, वह मनुष्य चाहे मोटे पापों से मुक्त भी हो जावे, वह न केवल अपना वा समाज का कोई भला नहीं कर सकता है, बल्कि वह अपने वा दूसरों के महा नाश का कारण बने बिना नहीं रह सकता अपनी "मैं" की गुलामी, अंह की गुलामी ही सारे पापों, बुराईयों, हक अपहरण, ज्यादतियों, अन्याय, जुल्मों, सितमों, अनर्थो, नर्को वा बर्बादियों की स्त्रोत होती है। "मैं" के प्यार के अन्धकार में पर का बोध नहीं होता, पर की हस्ती, पर के एहसासों का ख़्याल तक नहीं होता, जैसे किसी शेर, चीते को, किसी हिरण, बकरी या गाय आदि को चीरने फाड़ने समय उनकी जान, उनकी पीड़ा वा दर्द, उनके सहम, ख़ौफ और तड़पन आदि का

कोई एहसास नहीं होता उसी प्रकार "अंह" परिपूर्ण मनुष्यों को पर के दुख, सुख की कोई होश नही होती। मानव हृदय के भीतर "मैं" के प्रेम के बढ़ जाने, अंह की गुलामी के बढ़ने या निज स्वार्थ के हावी होने पर उसे शेर, चीते, सांप जैसा हिंसक बना देता है। उस हृदय के भीतर शेर, बघियाड़ या नाग भावनाएं गोते खाने लगती हैं। जहां "मैं" का इश्क का राज होता है, वहां पर सम्बन्धी किसी ख़्याल की रसाई असम्भव है।

इस सम्बन्ध में गुरू महाराज फरमाते हैं: -

"अंह संस्कृत का शब्द है, इसका अर्थ है "मैं" "पर" भी संस्कृत का शब्द है, जिसका अर्थ है कोई और दूसरा। "मैं" और 'पर' एक नहीं। जब तक किसी के हृदयों में, केवल इस प्रकार की इच्छा पैदा होती रहती है, कि मैं अपनी वासना या सुख तृष्णा को तृप्त करूं। मैं अपना आराम वा सुख प्राप्त करूं, मैं अपना फायदा देखूं साथ दूसरे को चाहे कितना ही बेवजह दुख मिले और चाहे कितनी भी नजायज़ हानि पंहुचे, तब तक उसके अन्दर "मैं" का कब्जा रहता है। यह "मैं" का भाव जब तक काम करता है और मनुष्य अपनी इस "मैं" के द्वारा प्रेरित होकर अपने किसी सुख या आराम या लाभ के लिए किसी दूसरे की किसी अनुचित हानि वा दुख को महसूस नहीं करता और किसी और को अनुचित दुख वा हानि पहुंचाकर भी अपनी एक वा दूसरी प्रकार की तृप्ति ढूंडता रहता है। इसी अंह की ही महा भयानक गुलामी से ही नाना प्रकार की तृष्ति ढूंडता रहता है, तब तक वह केवल "मैं" और अंह का ही दास रहता है। इसी अंह की ही महा भयानक गुलामी से ही नाना प्रकार के पापों वा अपराधों और अन्याय और जुल्मों की उत्पत्ति होती है।

यह अंह का दास, और पर के सम्बन्ध में पूर्ण अबोधी, चाहे किसी धर्म मत को मानता हो, चाहे किसी देवता या देवी का या ईश्वर का इक़रार करता हो, चाहे किसी पुस्तक को धर्म पुस्तक वा ईश्वर की पुस्तक कहता हो, चाहे किसी भी चीज़ का पाठ और पूजन भी करता हो, चाहे किसी प्रकार का तप वा जप करता हो, वह अवश्य ही पापाचारी और अज्ञानी और विषय लिप्त और मोह में लिप्त और नीच श्रेणी का जीव और नीच जीवन धारी आत्मा है।"- - - -

"अंह" प्रेम का कब्जा या अधिकार मनुष्य को एक तरफ अवश्य ही कुछ जनों का पक्षपाती बनाता है, दूसरी तरफ कुछ का घृणाकारी, द्वेषी, शत्रु, जालिम वा अनर्थकारी बनाता है। वह जो उसके सुख, उसके आराम, उसकी सेवा, उसके सन्मान, सत्कार, उसकी प्रशंसा या स्वार्थ सिद्धि के पलैन में सहायक बनता है, वह अपना प्यारा, अच्छा, ठीक, महान और उच्च नज़र आता है, उसका पैमाना मैरिट, सत्य वा शुभ नहीं रहता, केवल और केवल "मैं" निज सुख, निज सुरक्षा, निज सन्मान ही रहता है। और कोई चाहे कितना अच्छा हो, त्यागी हो, सेवाकारी हो, समाज सेवी हो, उच्च नतीजे वा सफलता पैदा करता हो, दान देता हो, परन्तु उसकी सुख सिद्धि में सहायक न होता हो, वह बेग़ाना, खराब, तुच्छ नीच और बुरा वा वैरी दिखाई देता है। वह उसको परे करना, दूर करना वा ख़त्म करना चाहता है। उसका लक्ष्य अपना सुख ही बन जाता है। कोई संस्था, परिवार या समाज के साथ या उसके भले बुरे के साथ उसका कोई सम्बन्ध वा सरोकार नहीं रहता। उसकी बला से कोई बर्बाद हो जाए, किसी संस्था वा समाज की कितनी हानि हो

जाए, उसके सिर पर जूं तक नहीं रेंगती। निज वा अपनी "मैं" से परे उसका ध्यान तक नहीं जाता। रावण की तरह न अपनी बर्बादी, न परिवार, समाज संस्था सम्बन्धी बर्बादी कुछ भी नज़र आती है। जैसे जहां आग है, वहां जलना, फूंकना वा राख ही होगी। उसी प्रकार जहां "मैं" का राज है, वहां परिवारों, संस्थाओं वा समाजों का नाश ही नाश होगा। रूस के डिक्टेटर स्टालिन ने भारत के राष्टपति वा फिलासफर सर राधा कृष्ण को बुलाकर पूछा था कि चन्द शब्दों में बताओ कि देशों वा संसार की समस्या या मुख्य मसला क्या है? उन्होंने उत्तर दिया था कि मुख्य मसला है कि "मैं ही हूं" इसका हल यह है कि "मैं भी हूं" पर और भी हैं"

जहां गज़नवी, हलाकू, चंगेज़ दनदनाएंगे, वहां उजड़े गांव, नगर, अबादियां, खून खराबे, लूट मार, की कोई कमी नहीं रहेगी, जहां "मैं" का राज वा इश्क है वहां परिवारों, संस्थाओं, समाजों, मनुष्यों, उच्च कारजों की तबाही और नाश की कमी नहीं रहती।

एक अंहकारी, महा स्वार्थी अपने निज सुख के लिए, अपनी मां, बाप, बहन, भाई, अपनी पत्नी तक को अपने निज सुख में अड़चन देखकर मार कर ख़त्म करने में पीछे नहीं रहता।

जिस हृदय पर "मैं" का राज है वहां रत्ती भर अलोचना भी सहन नहीं होती, बाल भर अलोचना से भी अलर्जी होती है। अलोचना ज़ख़्मों पर नमक की तरह लगती है। जो अलोचना का एक शब्द भी बोलता है, वह बेगाना, वैरी उसी समय ही बन जाता है, सच्ची, सेहतमन्द अलोचना के बिना किसी मनुष्य, परिवार संस्था, समाज, देश वा सरकार की रक्षा वा भलाई असम्भव है। जो अपने विरूद्ध सुन नहीं सकता, उसका कभी भला नहीं हो सकता और किसी का भला तो उसने क्या करना है। मनुष्य का यह दुर्भाग्य है कि चाहे अलोचना करने वाला उपकारी हितैषी, सेवाकारी वा खास अपना ही क्यों न हो, वह शत्रु ही नज़र आता है।

जहां शुभ का राज है, वहां "मैं" वा "अंह" स्वार्थ, पाप बाल भर भी पनप नहीं सकता, जहां "अंह" वा "मैं" वा स्वार्थ का ही राज्य है वहां सच्चा निज हित, परहित, परिवार हित, संस्था हित रता भर भी पनप नहीं सकते। "अंह" का वा परहित का ईट कुत्ते का बैर है।

अपने "अंह" से न दिखने वाली सूक्ष्म कोई चीज़ नहीं, कोई रोग नहीं। जितना अधिक इसका हम पर अधिकार वा कब्जा होता है उतना ही अपना आप अंह मुक्त नज़र आता है। फिर इससे मुक्त होने की इच्छा कैसे पैदा हो। अंह को काफी मात्रा में घटाए बिना मनुष्य को भली प्रकार देव ज्योति, जो हमारा ध्यान हमारे दोषों की तरफ फेरने की समर्थ्य रखती है, वह भी सारा जोर लगाकर भी प्राप्त नहीं होती। इसलिए बुरी तरह हलके गए कुत्ते की तरह अंह के आशिक का हाल हो जाता है, फिर नाश से बचना असम्भव हो जाता है।

बलदेव सिंह

पूजा का साधन

चण्डीगढ़ में पहले की तरह ईतवार का साधन 16 दिसम्बर को था। सभापति जी ने, हाजरीन जिनमें तीन Ph.d, 2 M.A. और एक B.A., L.L.B. भी शामिल थे, उनको सम्बोधन करके पूछा कि देव समाज में ईतवार की सभा का क्या महत्व या लक्ष्य है? तो उपस्थित जनों में से कुछ ने बताया कि ईतवार की सभा पूजा विषयक सभा होती है। इसमें परम पू० भगवान की पूजा करना लक्ष्य है।

सभापति जी ने अगला प्रश्न पूछा कि **पूजा क्या होती है?** इसके उत्तर में अपनी अपनी समझ से जबाब दिया कि किसी को महान देखना, किसी के गुणों को देखना, देवात्मा के देव प्रभावों को पाने का यत्न करना आदि आदि।

सभापति जी ने पूजा क्या है? इसका उत्तर देते हुए कहा कि पूजा किसी महान हस्ती के आगे दिल को झुकाना। मन वा हृदय की व्याख्या पूछने पर सभापति जी ने बताया कि किसी हस्ती की महानता की रोशनी में, अपनी नीचता, तुच्छता वा हीनता का एहसास होना और हृदय की नम्रता से ऐसी सदा वा अवाज़ का आना कि "साधो तुम ऐसे, मैं ऐसा" महानता की ऊंचाई से अपनी नीचता के दर्शन होने और इस एहसास के साथ सिर वा हृदय का झुकना। सच्चा प्रणाम भी वह है, जब हम किसी के सदगुणों की सुन्दरता को देखकर और अपनी तुच्छता के अनुभव से झुकते है। वैसे तो हमारा प्रणाम सलाम, बन्दगी वा बन्दर सलाम ही रह जाता है। इस तत्व को जान कर किसी ने पुकारा है, "जो सिर सांई न निवें, सो सिर कप उतार।"

भगवान देवात्मा के देवरूप की पूजा क्या है? परम पूजनीय भगवान देवात्मा के अद्वितीय और अलौकिक देव जीवन की झलक को किसी अंश में निहारना, और हीन होकर उस देव जीवन के आगे झुकना और उससे सच्चा उच्च रस प्रतीत करना। पूजा के साधन में अति हीन भावना के साथ भरकर परम पू० भगवान के देव रूप की अद्भुत देवरूप की चमक में उन के सामने सिर और हृदय को झुकाना है, यदि बार बार हमारा सिर और हृदय गुरू महाराज के आगे बेबस बार बार झुकते हैं, तो पूजा होती है, नहीं तो केवल सुनने और सुनाने का ही काम रह जाता है।

नेचर का विकास क्रम अद्भुत क्रिश्मों का स्त्रोत है, यह हमारा सूर्य, यह धरती और अन्य ग्रह, चांद, पेड़ पौधे, जीव जन्तु और अन्त में हम मनुष्य सब विकास क्रम के ही क्रिश्में हैं। उसी की उपज हैं। इसी विकास क्रम में, उच्च सात्विक, महान और वैज्ञानिक पैदा हुए हैं। उसी विकास क्रम ने अपनी अनोखी छलांग माकर, सुखों के आशिक मनुष्यों की महा भीड़ में सुखों के आशक नहीं, शुभ और भलाई के आशिक, केवल एक मात्र निराली हस्ती, निराले देव जो सबके पूजने के योग्य हैं, परम पू० भगवान देवात्मा को प्रगट कर दिया है। मनुष्य से बिल्कुल भिन्न पूंजी वशिष्ट गठन, शारीरिक नहीं, "मनोवैज्ञानिक" जो पू० भगवान देवात्मा को मिली है। उस अनोखे पन के उच्च तर श्रद्धा की आंखों से बार बार दर्शन के साथ मस्त होकर, उस अनोखी गठन के आगे सिर को झुकाना है। जितना हम इस प्रकार झुकते हैं, जितने उच्च रस से भरते हैं, उतनी हमारी पूजा सच्ची और

सार्थक होती है, नहीं तो नहीं।

यह भजन जिसका गान किया गया, यह बड़ा ही सुन्दर भजन है, यह किसी उच्च जन की सौभाग्य भरी हृदय की अवस्था के समय निकला है, "अद्वितीय है रूप तुम्हारा, जन समाज में हे भगवन।" नामक भजन सीधा पू० भगवान देवात्मा की पूजा में सहायक होने वाला है, क्यों जो यह पू० भगवान की अद्वितीय मनोवैज्ञानिक गठन के भिन्न भिन्न पहलुओं पर रोशनी डालता है और स्वभाविक ही सिर और हृदय उनके आगे झुकने के लिए बेबस हो जाता है, शर्त यही है कि दिल श्रद्धा से भरे हों। आओ! हम उक्त पक्षों के आगे हृदय को बार बार झुकाने का यत्न करें।

"अद्वितीय है प्रकाश तुम्हारा, विश्व के भीतर हे भगवन" हम नीच सुखों के दास, दुर्बल मनुष्य और नेचर के विकासकारी क्रम के अन्दर नीच सुखों से पूर्ण निर्मल, सत्य और शुभ के पूर्ण अनुरागों से सुशोभित निराली अद्भुत सूरत को बार बार हृदय की तह से प्रणाम करते हैं और धन्य धन्य महसूस करते है।

"आत्म जगत में अन्धकार के तुम हो नाशक हे भगवन, जीवन विषयक तत्व ज्ञान के तुम हो प्रकाशक हे भगवन।"

आत्मा जो मनुष्य के भीतर मुख्य वा सार वस्तु है, इस विषय में घनघोर अन्धेरा छाया हुआ है। किसी धर्म को इस विषय में आज तक कोई ज्ञान नहीं है। आत्मा क्या चीज है? कहां से आती है? उसकी गठन क्या है? उसके रोग क्या हैं? रोगों से पतन क्या है? पतन से मुक्त होना क्या है? आत्मा का विकास क्या है? इन पक्षों में पूर्ण अन्धकार है। इस अन्धेरे के कारण आज तक मनुष्य का सही स्वरूप ही अज्ञात रह रहा है, उसे नूर या देवत्व का शोला समझा जा रहा है। हे परम पू० भगवन! आप अद्भुत ज्योति के सूरज हैं, आप अपरोक्त घोर अन्धकार को हमारी योग्यता के अनुसार दूर करते हो। आत्मा जैसी सूक्ष्म वस्तु का तत्व ज्ञान देकर हमारे अन्धेर-मय हृदयों को रोशन करते हो, जिस सम्बन्धी, सारा मनुष्य मात्र, धर्म, ईष्ट वा ग्रन्थ रखकर भी घोर अन्धकार में भटक रहा है। हे अद्भुत रूहानी रोशनी के सूरज, रूहानी अन्धकार के हर्ता निराले देव! हम तुच्छ अन्धेरे के जीव बार बार आपके अद्भुत रोशनी के स्त्रोत रूप को उल्लास से भरकर, धन्य होकर प्रणाम करते हैं। हमारे सिर और तुच्छ हृदय आपके ऐसे निराले रूप के आगे नतमस्तक हैं।

"धर्म अधर्म के सत्य ज्ञान के तुम हो दाता हे भगवन"

धर्म क्या है? अधर्म क्या है? इसका सच्चा ज्ञान संसार के अन्दर है नहीं। पुण्य और पाप का पता नहीं, इसीलिए कभी नदी, नालों और अमावस वा पूर्णमा के मेले, स्नान, तीर्थ, ब्रत आदि सब अन्धेरे में मनुष्य मात्र टक्करें मार रहा है। पूजा, पाठ जाप, सिमरण के अथाह संग्राम जारी हैं। सारे धर्मो के धर्म साधन करके भी मनुष्य वहशी-पन, दरिंदगी से भर रहा है और संसार को नर्क का नमूना बना रहा है। आपने अद्भुत रोशनी देकर बताया है कि किसी और के आकार वा स्वभाव, व अपने आपको अच्छा बनाना, भला बनाना पुण्य गति है, उच्च गति है। अपनी वा दूसरों की हानि वा नाश, नीच गति है।

जो चिन्ता वा गति हमारे आत्म बल को बढ़ाती है, उसे उच्च गति कहते हैं। जो चिन्ता वा

क्रिया आत्म बल व ह्रास करती है, वह नीच गति है, पाप गति है। हे धर्म अधर्म सम्बन्धी, उक्त निराली वैज्ञानिक सोझी के दाता, परम पू० भगवन! हम अन्धेरे के जीवन और बेसुध वजूद, आपके उक्त उच्च सोझी के दाता रूप के आगे बार बार झुक झुक कर आपको नमस्कार करते है और धन्य धन्य कहते हैं।

"पापी जनों के जीवन के तुम सच्चे त्राता हे भगवन" सारे संसार में पापों की आग जल रही है। बाल, युवा, वृद्ध नर और नारी इसमें जल रहे हैं। बलात्कारों, कतलों के और आत्मघातों के भुचाल आ रहे हैं, और यह दिन दूनी, रात चौगनी बढ़ रहे हैं। कोई जप, काई नाम संसार के पापों को कम नहीं कर रहा। कोई पापों का नाश कर्ता अभी तक पैदा नहीं हुआ। हे तारणहार परम पू० भगवान! हम तुच्छ भी मिथ्या और पापों के सागर में गोते खा रहे थे। हमारे पाठ, पूजा, दुआ, नमाजें हमें पापों से नहीं बचा सके। आप ही देव ज्योति और देव तेज के सूर्य हो, देव घृणा, देव दुख और देव शत्रुता के स्त्रोत हो। आपने ही अपनी अद्वितीय देव शक्ति के द्वारा हमारे पापों को मिटाया है और कोढ़ों को दूर किया है। हमारे अन्दर उच्च परिवर्तन पैदा किए हैं जो आज तक कोई नहीं कर रहा और न कर सकता है। हे अद्भुत पापी जन रक्षक, पापी जन त्राता! आपके पाप के शत्रु रूप, पाप के अद्भुत नाशक रूप के आगे हृदय और मस्तक झुका झुकाकर आपको धन्य धन्य पुकारते हुए तृप्त नहीं हो रहे हैं।

"पाप बोध पापी के भीतर उत्पन्न करता हे भगवन" पाप बोध क्या होता है? इस सचाई को समझाया गया। जब मानव जो नीच सुखों के लिए जोरदार आकर्षण रखता है, और पाप कर्म करने के लिए बेबस होता है, उसके अन्दर की सुख लालसा को घटाने के साथ पापी पाप को तो छोड़ता ही है, परन्तु पाप बोध के बिना, वह ख़तरे में ही होता है। वह फिर पापों में फंस सकता है। पापों के प्रति सच्चा भय और दुख पैदा होने से ही रक्षा हो सकती है। पापों के प्रति भय और सच्चा दुख पैदा होने से ही पाप बोध की उत्पत्ति होती है। यह बोध तो किसी ने क्या पैदा करना था, इसकी सच्ची सोझी भी कोई नहीं दे सकता। सत्गुरू! आप अपने अद्भुत तेज अधिकारी हृदयों के भीतर पहुंचाकर पाप के प्रति सच्चे बोध को भी पैदा कर देते हैं। हमारे आकर्षणों को विकर्षणों में, घृणा में बदल देते हैं, संसार में कोई ऐसा करने की समर्थ्य नहीं रखता। आपकी ऐसी अद्वितीय समर्थ्य को, आपकी अद्भुत देव घृणा, देव दुख की शक्ति को, हम पापी, दुर्बल और महा मलीन जन बार बार सजदा करते हैं, और आपकी शरण के महा सौभाग्य को पाकर धन्य हो रहे हैं।

"योग्य जनों में उच्च जीवन के विकसित कर्ता है भगवन" सभापति जी ने अपने नीच जीवन को अनुभव करते हुए, परम पू० भगवान के प्रभावों द्वारा, किसी अंश उच्च भावों को श्रद्धा, शुक्रगुजारी, दया और हानि परिशोध को जो बर्बरी हृदयों में जगाया है कौओं को हंस बनाने के मार्ग पर डाला है, अपने रूप को निहारने की जो कुछ कुछ आखें पैदा कर रहे हैं, ऐस नीचों को उच्च बनाने वाले, ऐसी अद्भुत शक्तियों और समर्थ्य रखने वाले, ऐसे यक्ता देव रूप को गद्गद् हृदय के साथ लाख लाख प्रणाम करने की लालसा

प्रगट की। सभापति जी का हृदय बार बार श्रद्धा भाव से भर भरकर आ रहा था, बड़ा ही स्वर्गिय, उच्च रस से भरने वाला निराला वातावरण बन रहा था।

इस प्रकार परम पू० भगवान देवात्मा के "उच्च मेल और एकता प्रदाता" रूप की महिमा को सभापति जी ने पेश किया। ऐसे महा अद्भुत देव रूप की अनोखी अज़मत और महिमा को बार बार विस्तार से मद्गद होकर बहते आंसुओं से भगवान के आगे सजदा करते हुए धन्य धन्य होकर पेश किया।

ऐसे रूप को नगर नगर में दर्शाने की बेहद ज़रूरत है। देवात्मा का दान पाकर जरूरी है कि मुक्त कण्ठ से नगर नगर जाकर पाक खुशी से भरकर महिमा गाई जाए। ऐसे साधन से हम भगवान के अद्वितीय प्रभावों के दान को पाए रखने की अपनी समर्थ्य को बरकरार रख सकते हैं। यदि हमने जो दान पाया है, यदि उसका गुणगान नहीं कर सकते, अपने अनुभव दूसरों के साथ share नहीं करते, तो हम पू० भगवान के दान पाने की समर्थ्य को ही खो बैठेंगे।

सारी सभा रोशनी प्रदान करने वाली थी, हाजरीन पर देवात्मा के रूप को रोशन करने वाली थी, सच्ची पूजा क्या होती है, या पूजा की सभा क्या होती है, इस पर रोशनी डाली गई।

सभापति जी ने फिर बताया कि देव स्तोत्र का एक एक पद् भगवान के रूप के एक एक महान और अद्भुत पक्ष को रोशन करने वाला है। हर पद के गाने और हृदय की आंखों से निहारने से हमारे मन और शीश, गुरू रूप के आगे झुकने चाहिए। इसी प्रकार अद्भुत देव आरती का एक एक पद, परम पू० देव रूप के एक एक पक्ष को हमारे हृदयों को रोशन करने वाला है। और हमें उच्च रस प्रदान करने वाला है। यदि वह उच्च रस हम दान करते है तो सच्ची पूजा होती है।

बलदेव सिंह

मैं यह प्रयत्न करता हूं कि यह शुभ और अशुभ के जो भिन्न भिन्न मार्ग हैं, उनको तुम्हारे सामने प्रगट करू और देखूं कि तुम इन मार्गों में से किस को चुनते हो? शरीर के सम्बन्ध में मैं तुम्हें असयंम से हटाकर सयंमी बनाना चाहता हूं। क्या तुम संयमी बनना चाहते हो या असयंमी ही रहना चाहते हो? यदि असंयमी ही रहना चाहते हो, तो इसका तात्पर्य यह कि तुम रोग, दुर्बलता, बुरी शकल और कष्ट चाहते हो, जोकि सब कुछ असयंम से ही आता है। आत्मिक जीवन में भी इसी प्रकार से असंयम होता हैं, उसमें भी रोग, पीड़ा, दुर्बलता और कुत्सितपन आता है। शरीर और आत्मा दोनों ही नेचर में हैं और दोनों पर नेचर के नियम काम करते हैं। जब आत्मा नीच रागों के सुखों के लाभ की ओर जाता है, तब उसमें भी रोग, दुर्बलता, भद्धापन और दुख उत्पन्न होता है। जो जन आत्मिक जीवन में सचाई, भलाई का आकाक्षी नहीं, वह झूठ और बुराई आकांक्षी वा प्रेमक अवश्य है। मैं चाहता हूं कि जिन जिन के लिए सम्भव है, वह आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में सच्चाई और भलाई के साथी बन सकें और मिथ्या और बुराई के प्रेम से उद्धार पा सकें।

- देवात्मा

दूध की गंगा

पेय पदार्थों में दूध का महत्त्व हर किसी को पता है। यह हर उम्र के लोगों के लिए लाभकारी होता है। दूध केवल पीने के ही काम नहीं आता बल्कि इस से तमाम तरह की मिठाइयां, पनीर और खोया आदि भी बनता है। शहरों में दूध की खपत बढ़ती जा रही है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में ही हर रोज 20 से 25 लाख लिटर दूध की जरूरत होती है। यहां बड़े पैमाने पर आसपास के शहरों सीतापुर, रायबरेली, हरदोई, उन्नाव, बाराबंकी, सुल्तानपुर, अमेठी, लखीमपुर खीरी, बहराइच, गोंडा, बस्ती और बलरामपुर से दुधिए अपना दूध बेचने आते हैं। दूधिए अपना दूध 20 से 25 रूपए प्रति लिटर की दर से बेचते हैं जबकि ब्रांडेड कंपनियां 22 रूपए से 40 रूपए प्रति लिटर के हिसाब से अपना दूध बेचती हैं।

दूध के दामों में 1 रूपए की बढ़ोतरी होने पर ग्राहकों को लगता है कि उन पर बड़ा बोझ आ पड़ा है। सही माने में देखें तो ग्राहकों की यह सोच सही भी है। लेकिन ग्राहकों की यह समझ तब पता नहीं कहां चली जाती है जब वे अपने खूनपसीने की कमाई से जुटाए पैसों से महंगा दूध खरीद कर मूर्तियों पर चढ़ाते हैं, जहां से वह नालियों मे बह कर बरबाद हो जाता है। पैसे की बरबादी के साथ, यह दूध जैसे पौष्टिक आहार का अपमान भी होता है।

एक तरफ पूरे देश में खाद्यान्न की बरबादी को रोकने का अभियान चल रहा है तो दूसरी ओर मूर्तियों पर दूध चढ़ा कर उसे बरबाद किया जा रहा है। शिवमंदिरों में शिवलिंग को नहलाने में दूध का प्रयोग पूर साल किया जाता है लेकिन फरवरी मार्च के दौरान फाल्गुन में मनाई जाने वाली शिवरात्रि और जुलाई अगस्त के दौरान सावन में प्रत्येक सोमवार को शिवलिंग को नहलाने में दूध की ज्यादा जरूरत पड़ती है। इस कारण इन महीनों में दूध की यह खपत दोगुनी से भी अधिक हो जाती है।

<u>बहता है 2 करोड़ रूपए का दूध</u>

दूध कारोबार से जुड़े रामप्रसाद यादव कहते हैं, "शिवरात्रि के दिन दूध सामान्य दिनों से ज्यादा महंगा हो जाता है। ऐसे में दूध मे मिलावट का सहारा ले कर खपत को पूरा किया जाता है। केवल लखनऊ की बात करें तो उस दिन 10 लाख लिटर अतिरिक्त दूध की जरूरत होती है।"

अगर इस की कीमत 20 रूपए लिटर के हिसाब से भी लगाएं तो लगभग 2 करोड़ रूपए का दूध केवल लखनऊ में मूर्तियों पर चढ़ा दिया जाता है। ऐसा केवल लखनऊ में ही नहीं किया जाता, देख के छोटेबड़े सभी शहरों और गांवों में भी किया जाता है। यानी श्रद्धा के नाम पर दूध की बरबादी।

उस दिन गांव और छोटे शहरों से लखनऊ ला कर दूध बेचने वाले दूधिए नहीं आते क्योंकि उन के दूध की खपत गांवों में ही हो जाती है। शहर में दूध की खरीदारी करने वाले लोग दूध की शुद्धता देख कर दूध लेते हैं जबकि शिवलिंग पर दूध चढ़ाने वालों को इस से मतलब नहीं होता कि दूध में कितनी मिलावट है। चाहे जैसा दूध हो, वे खरीद लेते हैं।"

दूध के बाजार में न आने से दूध से जुड़े दूसरे उत्पाद भी महंगे हो जाते हैं। सब से खास असर पनीर और खोये के बाजार पर पड़ता है। खोया बेचने वाले

दिनेश यादव कहते हैं, "दीवाली के बाद सब से महंगा खोया शिवरात्रि में बिकता है। पहले गांवों में लोग दूध के लिए जानवर पालते थे। अब बहुत सारे घरों में दुधारू जानवर न के बराबर रह गए हैं। ऐसे में वे लोग भी खरीद कर ही दूध शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। गांव के लोगों में संपन्नता बढ़ने के साथ साथ धार्मिक खर्चों में भी उन की रूचि बढ़ी है जिस के कारण ऐसे अवसरों पर दूध व उस से जुड़े अन्य उत्पादों पर असर पड़ने लगा है।

पैकेट वाले दूध का चढ़ावा

सामान्य दूध को शिवलिंग पर चढ़ाने के लिए कुछ लोग लोटे के पानी में दूध मिला कर मूर्तियों पर चढ़ाते हैं। कुछ अमीर किस्म के भक्त दूध में पानी मिला कर चढ़ाने को गलत मानते हैं। वे दूध में नाममात्र के लिए गंगाजल मिला कर शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। इस में बेल, बेलपत्र, धतूरे, बेर और गेहूं की बाली भी शामिल होती हैं।

शहरों में तमाम लोग इधर से उधर जाने की भागदौड़ में लगे रहते हैं, ऐसे में लोटा और उस में खुला दूध डालने की परेशानी अलग होती है। इस से बचने के लिए वे लोग पैकेट में बिकने वाले दूध का सहारा लेते हैं। मंदिरों में ऐसे भक्तों को देखा जा सकता है जो दूध को प्लास्टिक के पैकेट से सीधा शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। ये लोग 200 ग्राम से ले कर 500 ग्राम तक के पैकेट का प्रयोग करते है। दूध चढ़ावे के इस बदले रंग के चलते इस दिन शहरों में पैकेट वाला दूध भी कम हो जाता है। बहुत सारे जरूरतमंद दूध से वंचित रह जाते हैं।

केवल दूध की बात नहीं, शिवलिंग पर चढ़ाने के लिए गेहूं की बाली, बेल, बेलपत्र का इस्तेमाल भी किया जाता है जिस से बड़ी संख्या में इन चीजों को तोड़ कर बाजार में बेचा जाता है। मंदिरों के पास बनी दुकानों में इसे पूजा सामग्री के नाम से बेचा जाता है। इस की कीमत 11 रूपए से 21 रूपए तक होती है। इस के अलावा शिवलिंग के पास एक दानपात्र अलग से रखा होता है जिस में 11 रूपए से 101 रूपए तक का दान डाला जाता है।

धर्म के नाम पर होने वाले खर्च लगातार बढ़ रहे हैं। पहले यह सोचा जाता था कि शिक्षा के साथ ही साथ धार्मिक आस्था और अंधविश्वास कम होगा। लेकिन सही माने में शिक्षित हो चुके, खासतौर पर युवा वर्ग तेजी से इस धार्मिक अंधविश्वास की तरफ बढ़ता जा रहा है। अब ऐसे खर्चों को लोग अपने रुतबे से जोड़ कर भी देखने लगे हैं। जिस के चलते लोग ज्यादा से ज्यादा पैसा खर्च करने का प्रयास करते हैं।

जागरूकता की जरूरत

सामाजिक विचारक रामचंद्र कटियार कहते हैं, "जिस तेजी से धर्म का प्रचार हो रहा है उस तेजी से धार्मिक अंधविश्वास का विरोध नहीं हो रहा है। कुछ बड़े लोग और नेता भी इस धार्मिक अंधविश्वास पर इतना यकीन करते हैं कि उन्हें देख कर छोटे लोग यह समझते हैं कि अंधविश्वास के कारण ही वे बड़े हैं। ऐसे में वे भी उन की तरह ही पूजापाठ में लग जाते हैं।

पूजापाठ में लोग अच्छी अच्छी बातें करते जरूर हैं पर उस पर अमल नहीं करते हैं। हर मंदिर में यह नोटिस बोर्ड भी लगा होता है कि चोर उचक्कों से सावधान। कई बार तो मूर्तियां तक चोरी हो जाती हैं। कहने का मतलब यह है कि धार्मिक आस्था वाली जगहों पर भी बड़ी संख्या में घटती ऐसी घटनाएं साफ इशारा करती हैं कि हमारी मानसिकता क्या व कैसी

है?"

गांव में रहने वाले छोटी बिरादरी के लोग अपने को बड़े लोगों के बराबार करने की होड़ में धार्मिक कामों से जुड़ रहे हैं। वे भले ही अपने बच्चों को स्कूल भेजने का खर्च न उठा पाते हों लेकिन मंदिरों में होने वाली पूजा और कथा में चढ़ावा जरूर चढ़ाते हैं। उन को लगाता है कि ऐसे काम कर के वे बड़े लोगों की बराबरी कर लेंगे। कई बार तो इन लोगों को यह भी नहीं पता होता कि धार्मिक कथा के माध्यम से क्या समझाया जा रहा है। इस के बाद भी वे बिना कुछ सोचेसमझे उस पर ताली बजाते रहते हैं। इस तरह की हालत से बाहर निकलने के लिए जागरूकता अभियान ही रामबाण साबित हो सकता है।

सही माने में धर्म और उस से जुड़े धार्मिक काम महंगे और खर्चीले होते हैं। कई बार तो ये खाद्य पदार्थ और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले भी होते हैं। इस खर्च का कम करने ओर पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने से बचाने के लिए आप को ही कुछ करना है। तरक्की और संपन्नता के लिए पूजापाठ नहीं मेहनत की जरूरत होती है। जो खर्च आप ऐसे कामों में करते हैं वही खर्च अगर आप अपने घरपरिवार पर करेंगे तो वह ज्यादा खुशहाल और संपन्न हो सकेगा।

-सरिता संवाददाता

दृढ़ता से कोलंबस ने खोजा अमेरिका

कोलंबस के मन एक ही धुन थी नई दुनिया की खोज। साधन सीमित थे, किंतु हौसला बड़ा था। उसने तय कर लिया कि अब नए देशों की खोज करनी हैं, तब उसके पास मात्र एक छोटा-सा जहाज था। उसने अपने कुछ सहयोगियों से इस विषय में चर्चा की। वे लोग उसकी लगन को देखकर उसका साथ देने के लिए राजी हो गए। सभी ने तय किया और एक दिन ठीक समय पर वे जहाज पर सवार होकर चले। सभी उत्साहित थे। चलते-चलते समुद्र में तूफान आ गया। तीन दिन तक उनका जहाज बड़ी-बड़ी लहरों से जूझता रहा। फिर जहाज का मस्तूल खराब हो गया। मस्तूल के खराब होने का आशय सीधे-सीधे जहाज को खतरा था और उस पर सवार लोगों की जान संकट में थी। कोलंबस के साथी घबरा गए। उन्होंने आगे जाने से मना किया तो कोलंबस ने उनकी हिम्मत बढ़ाते हुए कहा- 'तूफान हम सभी के साहस की परीक्षा ले रहा है। हम हार मानेंगे, तो कभी अपने लक्ष्य को हासिल नहीं कर पाएंगे। इसलिए बिना घबराए बढ़े चलो।' कोलंबस के शब्दों ने साथियों का जोश दिल दिया। वे आगे बढ़ते रहे, किन्तु कुछ देर बाद उनकी दिशा बताने वाली घड़ी खराब हो गई। उसकी खराबी से यह जानना जटिल हो गया कि वे लोग किधर जा रहे हैं? किंतु कोलंबस ने फिर भी हार नहीं मानी। उसने साथियों से कहा 'मेरा दृढ़ विश्वास है कि कितनी भी परेशानियां आएं, किंतु जीत हमारी ही होगी।' वास्तव में उसकी बात सही निकली। वे सभी आगे बढ़ते गए और आखिर उन्हें अमेरिका के रूप में वह नई दुनिया मिल गई जिसकी तलाश में वे निकले थे। सार यह है कि विपरीत परिस्थियों में भी अडिग रहने वालों को सफलता मिलती ही है। दृढ़ मनोबल अंतत: विजय हासिल करके ही रहता है।

मात पिता संतान दिवस

चण्डीगढ़ के डा० खेड़ा कोचिंग सैन्टर द्वारा रविवार 20 जनवरी 2013 को सैक्टर 23 स्थित बाल भवन में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता चण्डीगढ़ प्रशासन के गृह सचिव श्री अनिल कुमार ने करनी थी परन्तु अपनी व्यस्तता के कारण उन्होंने श्री मोहम्मद शाहीन, डैपुटीकमिश्नर चण्डीगढ़ को यह ज़िम्मा सौंपा।

डी०सी० महोदय के निश्चित समय पर आगमन पर उनका स्वागत करने के बाद कार्यक्रम आरम्भ हुआ। डा० विनोद खेड़ा ने उनका तथा अन्य अतिथिगण का स्वागत किया और उपस्थित जनों को यह बताया कि वे यह कार्यक्रम पिछले अनेक वर्षो से क्यों कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि देव धर्म संस्थापक परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने किस प्रकार माता पिता और उनकी संतान के संबंध को उच्च भावों के आधार पर मधुर व परस्पर हितकर बनाने का बीड़ा उठाया है क्योंकि यह संबंध मनुष्यों के लिए सब से पहला और मूल संबंध है। यह कार्यक्रम भी इस दिशा में एक छोटा सा प्रयास है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा द्वारा रचित "हे प्यारी संतान हमारी, सदा तुम्हारा हो कल्याण" तथा श्रद्धा भाजन मात पिता जी श्रद्धा भाव करूं उपहार" भजनों द्वारा कार्यक्रम का आरम्भ हुआ। इन गीतों के साथ सभाग्रह का वातावरण पूरी तरह भाव विभोर हो उठा। इसके पश्चात सेंटर के विद्यार्थियों ने "माँ प्यारी माँ गोद में तेरी खेला बचपन मेरा" तथा "माता पिता की सेवा दिल से किया करेगें" भजन दिल के बहुत अच्छे भावों से प्रस्तुत किए जिसके कारण सभाग्रह का वातावरण और भी भावुक हो गया।

Ceaching centre के विद्यार्थियों ने एक विशेष नाटक प्रस्तुत किया जिसका नाम था " एक अनोखी बेटी ऐसी भी" यह नाटक एक रूसी बालिका Presskovia की अपने माता पिता के लिए अनोखी कुर्बानी और प्यार पर आधारित था। जिसके सम्वाद डा० विनीत खेड़ा ने लिखे थे। लगभग 50 मिनट का यह नाटक सभी अतिथिगणों को किसी और ही लोग में ले गया। नाटक के अंत में सभी पात्रों ने अपना-2 भाव प्रकाश किया जिसमें उन्होनें रो-रो कर अपने माता पिता के संबध में अपनी नीच अवस्था एवं नीच गतियों का गहरे दुख से भर कर प्रकाश किया। श्रोतागणों में से शायद ही कोई ऐसा हो जो उस समय अपनी माता-पिता के संबध में अपनी गल्तियों का आभास न कर रहा हो।

इसके पश्चात मुख्याति थी महोदय श्री मोहम्मद शाहीन डिप्टी कमिश्नर चण्डीगढ़ ने मंच से सभी श्रोतागणें को सम्बोधित किया। उन्होनें एक कोंचिग सेंटर द्वारा ऐसा कार्यक्रम प्रस्तुत करने की कोशिश की भरपूर प्रशंशा की। उन्होने कहा कि मुझे श्री अनिल कुमार जी Home secretary ने आदेश दिया कि आप इस function को attend कीजिए क्योंकि यह एक ऐसा function है जिसमें बच्चों को society के साथ रहने की और परिवार के साथ रहने की values सिखाई जाती हैं और दिखाई जाती हैं। मुझे नहीं पता था कि थोड़ी देर बाद इतना emotional समारोह बन जाता है। मुझे बहुत अच्छा लगा कि जो बच्चे अपना carreer बनाने में लगे हैं वो इस तरह

से अपने कर्तव्यों को पहचान पा रहे हैं। और आप भी अपनी संस्था में केवल engineer या Doctor बनाने का काम ही नहीं कर रहे हैं अपितु मां-बाप के प्रति उनके कर्तव्यों का उनके मन में जगा पा रहे हैं जिसके लिए मैं आपको तहे दिल से मुबारक बाद देता हूँ। इसके अतिरिक्त उन्होने बताया कि उनकी माता जी एक बहुत उच्चकोटी की Neuro surgeon हैं जो राजस्थान सरकार में सेवारत थीं। उन्होनें मेरा जीवन बनाने के लिए अपनी उच्च कोटी की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। राजस्थान के मुख्यमंत्री (जो आजकल हरियाणा के राज्यपाल हैं) ने मेरी माता जी से त्यागपत्र वापस लेने के लिए पुरजोर अपील की, परन्तु उन्होने मेरे जीवन को बढ़ाने को प्राथमिकता दी।

उन्होने विद्यार्थियों को सलाह दी कि आप स्वार्थ को अपने ऊपर किसी भी हालत में हावी न होने दें और सेवा भाव द्वारा अपनी और अपने देश की सेवा करें। उन्होने माता पिता के भीतर बच्चों के प्रति मोह होने के कारण उनकी गलत बातों में बच्चों का साथ देने की बात कही तथा ये सुझाव दिया कि माता पिता को अपने बच्चों की आदतें बिगाड़ने में मददगार नहीं होना चाहिए।

मुख्य अतिथी के भाषण के बाद coaching centre के विद्यार्थियों ने एक समूह गीत प्रस्तुत किया जिसके बोल थे "हर बात को तुम भूलो भले मां बाप को मत भूलना इसके पश्चात Dr. Khera के पूर्व अध्यापक Dr. Y.S. Bhatia ने सभी गाने वालेएवं नाटक वाले विद्यार्थियों एवं उनके प्रशिक्षकों को सम्मानित किया। तदोपंरात Dr. Vinod Khera ने देव धर्म सस्थापक परम पूजनीय भगवान देवात्मा को हृदयगत भावों से धन्यवाद दिया जिनकी कृपा से वह ऐसे समारोह आयोजित कर पाते हैं।

सभापति जी एवं सभी आगन्तुकों को धन्यवाद दिया गया। विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव जी के अस्वस्थ होने के कारण उनकी अनुपस्थिती को विशेष रूप से अनुभव किया गया।

एक हाजरीन

तुम्हारे सामने दो बातें अच्छी तरह साफ होनी चाहिए, एक तो यह कि हम नेचर में कोई क्रिया करके उसके फल से नहीं बच सकते। यह फल दो ही प्रकार के हो सकते हैं, शुभकर या अशुभकर। दूसरे यह कि यदि इस तत्व को उपलब्ध करके भी तुम्हारे दिल में शुभ के पथ पर चलने की कोई अकांक्षा न जागे, तो नचर के अटल नियम के अनुसार तुम्हारा अपने लिए और औरों के लिए अहितकर बनना अवश्यक है। यह सचाई उन्ही जनों को नज़र आ सकती है, कि जिनमें मेरी रोशनी पहुंच सके, औरो को नहीं।

- देवात्मा

कल्याण में माता पिता दिवस

इस बार कल्याण में माता-पिता दिवस 15 फरवरी से 17 फरवरी तक रखा गया 1 धर्म सम्बन्धियों को सामाजिक पत्रिकाओं वा टैलीफोनों के द्वारा सूचित किया गया। स्थानिक धर्म सम्बन्धियों ने यात्रियों के ठहरने वा खाने पीने का प्रबन्ध किया। लगभग 22 स्थानों, दिल्ली, पंजाब, हरियाण, पू०पी०, उतराखण्ड, चण्डीगढ़, हिमाचल, राजस्थान, गुजरात आदि स्थानों से 60 के लगभग पहुंचे।

15.2.2013 : शाम 6.30 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:

उन्होंने बताया कि इस गांव का नाम कल्याण है। गुरू महाराज ने यहां पहुंचकर सचमुच हमारे कल्याण के सामान पैदा कर दिए हैं। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने यहां रहकर बहुत तप कमाया है। और धर्म सम्बन्धियों ने भी यहां चरण पाए हैं और कोई धर्म सम्बन्धियों ने इस स्थान को तपो भूमि बनाने में बहुत योगदान दिया है। संसार बुरी तरह से मिथ्या विश्वासों में फंसा हुआ है। आजकल कुम्भ चल रहा है, वहां घोर मिथ्या फैली हुई है। प्रचलित धर्म मतों ने यही सीखा है कि हमारे सम्बन्ध परमात्मा को पाने में रुकावट है। सम्बन्धों के त्याग को धर्म बताया गया है। गुरू महाराज ने समझाया है कि मुनष्यों सम्बन्धों के बिना कुछ भी नहीं। सम्बन्धों में ही पाप है, सम्बन्धों में ही धर्म है। स्त्री जाति पर जुल्मों की भरमार है। इस वर्ष 14 फरवरी को सारे संसार की स्त्रियों ने एकजुट होकर Valentine Day मनाया और ज़ोरदार आवाज़ उठाई कि अब और जुल्म बर्दाश्त नहीं हो सकता। इस ही दिन विश्व प्रसिद्ध 2013 के ओलपिंक के धावक ने अपनी दोस्त रीवा को अपने बाथरूम में गोलियां मारकर कतल कर दिया। सारा मनुष्य मात्र अपने बारे में नहीं जानता। मान्सिक ज्ञान से यह बात समझ नहीं आ सकती, जो उच्च भावों से समझ आती है। अपने श्रद्धेय पिता जी वा एक और जन की उदाहरण से इस बात को स्पष्ट किया।

फिर श्रीमान बलदेव सिंह ने बहुत सुन्दर उदाहरणों के द्वारा यह समझाया कि प्रलोक मनुष्य को परम पू० भगवान की ज्योति के बिना अपना ज्ञान नहीं हो सकता। हम मानवता उनकी मोहताज हैं। तकरीबन 8.30 बजे तक यह सभा चली।

16.2.2013, सुबह 9 बजे- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी :- सभापति जी ने बताया कि पू० भगवान नेचर के विकास क्रम में प्रगट हुए हैं। विकास क्रम नेचर का नियम है जो सदा रहता है। विकास क्रम को समझे बिना परम पू० भगवान वा उनके महान कारज को समझना असम्भव है। नेचर के चारों जगतों में विकास क्रम जारी है। सेबों का विकास छोटे फलों से हुआ है। मनुष्य जाति में उच्च भावों का विकास हुआ है। मनुष्य के शरीर का विकास हुआ है। मनुष्य अपनी अन्धता में अपने विकास का स्वयं विरोधी बना रहता है। मैं वह आदमी हूं जो देवात्मा के कारज का दुश्मन बना हुआ था। सचाई यह है कि विकास क्रम द्वारा देवात्मा ऐसे रुतबे को प्राप्त हुए हैं, जिसकी समझ आनी कठिन है। मनुष्य और देवात्मा के दर्जे का नहीं श्रेणी का अन्तर है। नेचर के स्थूल रूप के बिना सूक्षम रूप भी है। इसके हर रूप में असरों का खेल जारी है और बहुत व्यापक है। हर अस्तित्व असर छोडता है ओर

ग्रहव करता है। बुरे असरों के बुरे फल होते हैं। वैश्याओं के बाज़ार में रहकर पवित्र रहना कठिन है। जोगा सिंह जी की शिक्षाप्रद कथा का वर्णन किया कि किस प्रकार शराबियों की संगत करके शराबी बनकर सेवकी से कट गया और असमय मृत्यु को प्राप्त हुआ। महात्मा गांधी ने भी बुरी संगत में अपवित्रता को ग्रहण किया। चौधरी नरेन्द्र जी एक डाक्टर साहिब को लेकर आए हैं परन्तु स्वंय बुरे असरों से गिर गए थे। हमें आम तौर पर असरों का बोध नहीं है। कुम्भ के मेले में पंडित नेतराम जी नीच असरों के शिकार हो गए। श्रीमान जी उच्च धर्म सम्बन्धियों के उच्च असरों को याद करके भावुक हो गए और फरमाया:- "आता है याद मुझको, गुज़रा हुआ जमाना।" श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने फरमाया था कि हमें रूपये नहीं सरमुख सिंह जी चाहिए, श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी गुरु चरणों को छोड़कर पिता की मृत्यु पर भी नही गए। सभापति जी ने बहुत जोर देकर बताया कि धर्म विकासालय में साधन करते थे, वहां के असरों ने माता का रूप दिखाया। 43 वर्ष के बाद भी मां का हृदय में वही स्थान बना हुआ है। श्री रजिन्द्र जी देहरादून, श्रीमान जल्लौर सिंह जी के सपुत्र की किस प्रकार उच्च असरों ने काया कल्प की, उसका ब्यान किया। यह सभा बहुत ज़ोरदार थी।

16.2.2013, 3 बजे दोपहर, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:- प्रत्येक मनुष्य के लिए यह जानना ज़रूरी है कि उसे उसके भाव चलाते हैं। वह हर गति अपने भावों से परिचालित होकर ही करता है। हर मनुष्य अपने भावों का ही हुक्म मानता है। दूसरा मनुष्य के लिए यह जानना भी ज़रूरी है कि यह भाव बहुत शक्तिशाली होते हैं। मनुष्य के लिए यह जानना भी ज़रूरी है कि वह अपनी योग्यता से इन भावों को प्रकृत रूप में जान नहीं सकता। अपने भावों को असल रूप में जानना ही अपने आपको जानना है। मनुष्य की संसारिक योग्यताएं वा प्राप्तियां इसमें सहायक नहीं होती। बल्कि उसका अन्धकार और बढ़ा देती है। अपने भावों को जानना अपने आत्मा को जानना है। आत्मा को आत्मिक ज्योति के बिना नहीं जाना जा सकता। यह अनुपम ज्योति नेचर ने देवात्मा के अन्दर ही पैदा की है। इस अध्यात्मिक ज्योति के बिना धर्म जगत में प्रवेश असम्भव है। कौन सा भाव हमें कैसे चलाकर हमारी हानि वा बर्बादी कर रहा है, वह इस ज्योति के बिना नज़र नहीं आता। सभापति जी ने बताया कि एक बार पर्वत आश्रम सोलन में मुझे यह रोशनी मिली थी, मैं अपनी अति कृपा पात्र वा अति दुर्बल वा बन्धुआ अवस्था को देखकर कई घण्टे रोता रहा।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी कई दृष्टांत देकर इस सचाई को रोशन किया कि मनुष्य अपने भावों को परम पू० भगवान देवात्मा की देव ज्योति द्वारा देखकर परवर्तित होने के लिए प्रेरणा अनुभव करता है। उनके तेज को पाकर अपनी दुर्बलता से निकलने का संग्राम करना शुरू करता है। यह महसूस हो रहा था कि हमें देवात्मा के देव प्रभावों की कितनी अधिक अवश्यकता है। वह जन सौभाग्यवान हैं जो देवात्मा के देव असरों को पाने का यत्न वा संग्राम करते हैं।

16.2.2013, रात 7.30 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:- परम पू० भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि सम्बन्धों में नीच भावों द्वारा मनुष्य अपनी और औरों की हानि और बर्बादी करता है, आप अत्यन्त दुखी होता है औरों के लिए भी दुख पैदा

करता है। इन्हीं सम्बन्धों में उच्च भावों द्वारा मनुष्य सुख वा स्वर्ग पैदा कर सकता है। सारे व्यवहारों का आधार उच्च भाव हों तो सुख और विकास प्राप्त होता है। श्रद्धेय कनल जी के बचपन की घटना का जिकर करते हुए बताया कि वह अपने छोटे बहन भाईयों के लिए कैसे महसूस करते थे। सर्दी में अपने कोट के कपड़े से छोटे भाई का कोट बना दिया। इसके उल्ट जैसे श्रीमान बलदेव सिंह जी बताया करते हैं कि कैसे एक भाई इसलिए दुखी है कि उसके भाई के घर दूध है, मेरे पास नहीं है। यदि मुझे यह खबर मिले कि भाई की भैंस को सांप काट गया और वह मर गई है तो मेरे दिल को शान्ति मिले। सभापति जी ने बताया कि मेरा भी गुरू की शिक्षा वा प्रभावों से अपने बहन भाईयों के साथ रिश्ता बहुत मधुर वा सुख दायक बन गया है। मेरी बहनें मेरे पहुंचने पर विशेष प्यार वा सन्मान का बड़ा सुन्दर प्रदर्शन करती हैं। मेरे लिए विशेष बिस्तर वा विशेष चाव के साथ भोजन बनाती हैं।

माननिय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने अपने विशेष भावों से इस विषय में ब्यान किया। उन्होंने चार्लज़ लैंब की अपनी बहन के लिए कुर्बानी बताई कि उन्होंने अपनी बहन की सेवा और सम्भाल के लिए शादी का त्याग कर दिया। बहन के लिए शैक्सपीयर के ड्रामों का कहानी रूपान्तर तैय्यार किया, Tales from Shakespear किताब केवल अपनी बहन के लिए ही लिखी। गुरू महाराज ने सारे सम्बन्धों में हमदर्दी, सन्मान, शुक्रगुज़ारी के उच्च भावों द्वारा सुन्दर व्यवहार करने के आदेश दिए हैं। श्रीमान जी ने दृष्टांतों द्वारा इस सभा का मण्डल और भी प्रभावदायक बना दिया।

17.2.2013, विशेष सभा - सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी: - देव स्तोत्र के गान और अर्चन के बाद सभापति जी ने गुरू महाराज के श्री चरणों में दीन भावी होकर आर्शीवाद प्रार्थना की। श्रीमान जगदीष जी ने "श्रद्धा भाजन मात पिता जी, श्रद्धा भाव करूं उपहार" नामक भजन का हृदयगत भावों से गान किया।

सभापति जी ने फरमाया कि देव धर्म के बिना किसी धर्म मत में ऐसे साधन नहीं किए जाते, जैसा साधन आज हम कर रहे है। देव रूपधारी देवात्मा ने यह शिक्षा दी है कि पापों से बचना, आग से बचना है। इससे आगे सम्बन्धों में जीना भी सीखना है। एक बहुत महान गुरू को भी मां के रूप का अनुमान नहीं, इसलिए मां ने जब कहा कि बेटा तुम कहते हो स्त्रियों में इतने चरित्र होते हैं, तो उन्होंने कहा कि मां तेरे में एक दो कम होंगे। मां का रूतबा बहुत महान होता है। एक पुराने गीत में आता है, "ऐ मां तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी, उसको नहीं देखा हमने कभी, और इसकी जरूरत क्या होगी।" गुरू महाराज फरमाते हैं कि कम से कम 16 सम्बन्धों में जीना सीखो। जिनसे जन्म पाया, पालना करवाई, शिक्षा पाई और रक्षा पाई, यदि उनसे हमारा सम्बन्ध न हो, तो बहुत कृपा पात्र अवस्था है। सुन्दर से सुन्दर वजूद पैदा होते हैं, बाहरी सुन्दरता भी माता पिता का दान हैं बीरबल अकबर बादशाह के नौ रतनों में से एक था। बीरबल के जन्म की कहानी माता की कुर्बानी की कहानी है, उसने अपने बेटे को महान बनाने के लिए दुखी होकर उसके जन्म को उस समय तक टाला।

मैं माता पिता का धन्यवादी हूं जिन्होंने ऐसा दिल वा बुद्धि दी कि जिससे देवात्मा के दर की कुछ

समझ वा कदर पता लग गई। पहले यही समझ थी कि देव समाज पापों से बचाती है। फिर यह पता लगा कि समाज सम्बन्धों में सुधार लाती है और विकास करती है। फिर इसलिए भी अच्छी लगी कि यह अपनी पुस्तकों की कीमत चौथाई ही लेती है। फिर यह समझ आई कि यह समाज विकासालय में दाखिल करके धर्म की समझ और ताकत प्रदान करती है। हमारे सौभाग्य की सीमा नहीं है कि महा हितकर धर्म का सच्चा ज्ञान मिला है। नीच भावों के कारण सम्बन्धों में दूरियां पैदा हो जाती हैं। श्रीमान गण्डा सिंह जी लहौर गुरू चरणों में थे, उनके साथ सैर करने जाया करते थे। गुरूजी ने पूछा कि सुबह माता को प्रणाम तो करते ही होंगे तो उन्होंने उत्तर दिया, महाराज हम सुबह उठकर लड़ाई झगड़ा ही न करें, तो बड़ी ग़नीमत है, प्रणाम करना हमारी दुनियां नहीं। गुरू महाराज ने हुक्म दिया कि तुम मेरे साथ सैर को नहीं जा सकते। श्रीमान गण्डा सिंह जी माता जी के पास पहुंचे, उनके चरणों में प्रणाम किया, फिर गुरू चरणों में अर्ज़ की कि महाराज मुझे यह पता ही नहीं था कि सुबह माता को प्रणाम करना अच्छा साधन है। सच्चे सन्मान के बिना प्रणाम का सच्चा साधन नहीं हो सकता। वास्तव में माता पिता महान तप करते हैं। उस तप के बिना बच्चे का जन्म ही नहीं हो सकता। मोगे के दो बच्चों के जन्म में मां ने जो महान तप किया, उसका भाव पूर्ण वर्णन किया। कुछ कर्जे ऐसे होते हैं जो उतारने असम्भव होते हैं। हम माता पिता का कर्ज़ा कभी उतार नहीं सकते। माता पिता को सन्तान का यह कहना कि आपने मेरे लिए किया ही क्या है, उनके खंजर मारने के समान होगा। माता पिता, सच्चे अध्यापिक, सच्चे डाक्टर और हितकारी धर्म सम्बन्धी ऐसे उपकारी सम्बन्धी है, जिनका कर्ज़ा कभी उतारा नहीं जा सकता। माता पिता अपने बच्चों के लिए डाक्टरों के घरों में नौकर बनने को तैय्यार हो जाते हैं ताकि उनकी सन्तान का ईलाज ठीक हो जाए। औरंगजेब बादशाह घटिया और जालिम सन्तान की उदाहरण है। अपने पिता को सुराही भी नहीं देने दी। दिल लगाने के लिए बच्चे भी नहीं भेजे। पर भीष्मपितामह और सरवन कुमार भी इसी देश की सन्तान हैं जिन पर भारत फख़र करता है। यदि मुझे समाज न मिलती तेा मेरा माता के साथ सम्बन्ध बहुत बुरा होना था। एक पोस्ट ग्रेजुएट अध्यापिक को इस वातावरण में नज़र आया है कि हमने अपनी मां को रबर की तरह घिसा घिसा कर मार दिया, पर उसकी तपस्या कुर्बानी नज़र नहीं आई थी। श्रीमान कर्म सिंह जी इन अपशब्दों के लिए रो रोकर प्रकाश करते थे, जो उन्होंने अपने माता पिता को कहे थे। श्री सभापति जी और सुन्दर उदाहरणों के बाद श्रीमान भाई अतर सिंह जी डरोली भाई तहसीलदार की माता के चरण सेवा को भाव पूर्ण होकर वर्णन किया, वह कैसे कचहरी से वापिस आकर माता के चरणों को साफ तौलिए से पोंछ दिया करते थे। कई दिनों की चरण सेवा के बाद उनके भाव और उमड़ पड़े, उस दिन उन्होंने उनके चरण धोकर अपनी साफ सफेद पगड़ी उतारी और माता के चरणों को पोंछा और जार जार अश्रुओं की धारा उनकी आंखों से बह निकली। देवात्मा सत्गुरू ने अपने देव असरों से ऐसे सरवण कुमार पैदा किए हैं, जिन्होंने धरती पर स्वर्ग पैदा किया है। श्रीमान कंवर दविन्द्र सिंह जी लुक्खी ने भी आज्ञाकारी, ईमानदार, श्रद्धावान, सेवाकारी बेटा होने का महा अधिकार देवात्मा के देव असरों द्वारा ही प्राप्त किया। ऐसी फोटो खिंचवाई जिसमें पिता के चरणों में साष्टांग लेटे हुए हैं। ऐसी फोटो

Published on 5th of the month
20
मार्च - 2013
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

किसी बेटे ने नहीं खिंचवाई होगी। फिर सभापति जी ने फरमाया कि गुरू को पहचानो और माता पिता के उपकारों को याद करो।

भाव प्रकाश :- फिर 10 - 11 जनों ने अपने भावों का प्रकाश किया।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:- आप लोग 2 दर्जन से अधिक स्थानों से आए हो, हमें आप लोगों की जितनी सन्मान वा सेवा करनी चाहिए थी, वह नहीं कर सके। इसलिए क्षमा चाहते हैं। इस दर से जो बरकतें मिली हैं, उनका ब्यान नहीं हो सकता। परम पू० भगवान देवात्मा की दुनियां अजीब है, वह ऐसे देव असरों के दाता है, जिनकी सब मनुष्यों को अवश्यकता है। उनकी रोशनी के बिना मनुष्य बहुत कुछ अन्धा ही रहता है। हम विद्या, धन, मकान, रूतबे पाकर पागल हो जाते है। अपना आप देखने के अयोग्य है। मेरे माता पिता ने बेहद मेहनत करके मुझे पाला है, पढ़ाया है। इससे दिमाग़ फिर गया। मैं यह समझने लगा कि मैं कोई खास चीज़ हूं। वह मुझे अनपढ़ गंवार नज़र आते थे, न ठीक तरह खाना खा सकते हैं, न कोई शिष्टाचार है। परम पू० भगवान देवात्मा ने माता पिता का असल, महान बढ़िया और सुन्दर रूप दिखा दिया। वह अत्यन्त अच्छे और प्यारे लगने लगे। अपना आप कृत्घन, दोषी, अपराधी पुत्र नज़र आता है। कुछ मामूली माता पिता की सन्मान, सेवा का मौका मिला है। कहा गया है, "मुहब्बत के लिए कुछ खास दिल ही मख़सूस होते हैं" यदि श्रद्धा न हो तो हम माता पिता को नहीं देख सकते। कृतज्ञता न हो तो उनका असीम कर्ज़ा नहीं देख सकते, उतारना तो दूर की बात है। आप सब को फिर धन्यवाद देता हूं।

श्रीमान मधुसूदन जी चण्डीगढ़:- पिता जी के उपकार साधन में नज़र आए हैं। डाक्टर विनोद जी खेड़ा के माता जी, जीजी के बेहद उपकार हैं। मैंने तो सम्बधों में लड़ झगड़ कर मर जाना था। मैंने बहन को थप्पड़ मारा था, आज बड़ा दुख हुआ। अब चाचा जी के लड़के भाई मुझे बहुत प्यार करते हैं। चाचा जी का उपकारी रूप नज़र आया है। आप सबको धन्यवाद देता हूं।

श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना:-
मुझे फख़र है कि मुझे विकासवाद की समझ आई है। विज्ञान मूलक धर्म प्राप्त हो गया। श्रीमान जी की प्रेरणा से यहां पहुंचा हूं। स्वार्थ वा अंहकार के वश सम्बन्धियों के उपकार नज़र नहीं आते। उपकारियों के बगैर मेरा अस्तित्व कुछ भी नहीं। यू०पी० मेरठ में गंगा

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts